F-5
D.El.Ed-1st year

इकाई-III

Date:- 07.05.20

Topic:- भाषा सीखना : बी. एफ. स्किनर

Ans:→ पैवलोव, स्किनर आदि व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य से जुड़े है। व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार सीखने की प्रक्रिया में उद्दीपन-प्रतिक्रिया-पुनर्बलन का विशेष महत्व होता है। किसी भी चीज को सीखने के लिए अपना प्रतिक्रिया करने के लिए उद्दीपन की उपस्थिति अनिवार्य है और बच्चे को उस प्रतिक्रिया पर किसी प्रकार का पुनर्बलन प्राप्त होता है तो सीखने की प्रक्रिया पुष्ट होती है। इसका सीधा-सा तात्पर्य यह है कि सीखने की प्रक्रिया का मूल वातावरण में कहीं निहित है। इस व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार बच्चे परिवेश में उपलब्ध भाषा का अनुकरण करते हुए भाषा सीखते है। मान लीजिए बच्चे ने शब्द सुने-पापा, चाचा, पानी, मैं, चाहिए, रोटी, गाय, आदि। बच्चा इन शब्दो को सुनकर उनका अनुकरण करेगा और इन्ही शब्दो को दोहरा देगा। जब बच्चे को इन शब्दो के दोहराने पर सकारात्मक पुनर्बलन प्राप्त होगा तो उसकी भाषा पुष्ट होती चली जाएगी। अब सवाल उठता है कि यदि केवल अनुकरण के माध्यम से ही भाषा सीखी जाती है तो बच्चे उतने ही शब्द या वाक्य बोलेंगे जितने उसने अपने परिवेश में सुने।

लेकिन आपके, हमारे, सभी के अनुभव बताते है कि बच्चे जितना और जिस तरह का भाषा सुनते है उससे अधिक और अलग प्रकार की भाषा प्रयोग करने की क्षमता बच्चों में होती है। इस व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के विपक्ष में मुख्यत: दो तर्क है। एक, यदि भाषा अनुकरण के माध्यम से ही सीखी जाती तो बच्चे उतनी ही भाषिक संरचनाओं का प्रयोग करते जो उनके वयस्क बोलते है। मान लिजिए बच्चा अपने परिवेश में आठ वाक्य सुनता है तो वह केवल आठ वाक्य का ही प्रयोग करेगा। इस तरह तो उसे सभी तरह की भाषिक संरचनाओं को सीखना पड़ेगा। लेकिन ऐसा होता नही है। दूसरा, बच्चे भाषा का सृजनात्मक प्रयोग नही कर पाते। आपने देखा होगा कि बच्चे खेलते हुए भाषा के ~~साथ~~ शब्दो के साथ खेलते है, उन्हे तोड़ते-मरोड़ते है और नए-नए शब्द बनाते है। यदि भाषा के माध्यम से ही सिखी जाती तो भाषा की परिवर्तनशीलता और समृद्धि पर भी प्रश्न-चिन्ह लगाता।

END